रेड वाईन ज़िन्दगी

निर्मल जसवाल

रेड वाइन ज़िंदगी

निर्मल जसवाल

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: अगस्त, 2024

© निर्मल जसवाल

अनुक्रम

नगीना	3
लीना, इन्द्र, कश्मीरन, भोपाली	30
नगीना, चन्द्र, अनुज, भ्रूण	57
चंडीगढ़, दिलरूप, विशाल, नगीना, समीर	79
महेश्वरम, समीर, गान्दर्वल, जम्मू	93
नगीना, परी (छुटकी), बड़ी, पति, धर्मशाला	134
अमरीका, बोस्टन, दामोदर	146
एडमिन्टन-हैनरी	165
लीना-इन्द्र	189
महेश्वरम-नगीना	209
लीना- नगीना	216

नगीना

नगीना ने उलट-पलट कर उस बड़े से लिफ़ाफ़े को खोला। बाहर तो उसका नाम न था परन्तु कई पत्रों, पुस्तिकाओं और पत्रिकाओं के बीच यह नीला सा लिफ़ाफ़ा उसे उठाने के लिए जैसे निमंत्रित कर रहा था। पोस्ट बॉक्स में डाक की ग़लती से आ गया था, नियति के चक्रव्यूह रचाने पर वह हैरान हुई।

तन्मयता से उसे खोला। उसमें एक आर्टीकल था किसी कश्मीरी पंडित लेखक द्वारा लिखित, जो शायद अपने गन्तव्य से भटक उसके हाथों में आ गया था। कहीं किसी का नाम नहीं। आर्टीकल के ऊपर एक कोने में लेखक का नाम था और बड़े ही सलीके से मोबाईल न. को बड़े-बड़े अक्षरों में उभारकर लिखा हुआ, जैसे लेख की नहीं उस अक्षर की कहीं ज़्यादा अहमियत हो। सरसरी नज़र डालने पर लेख में कश्मीरी पंडितों का पलायन, 1947 के बंटवारे की तुलना बेहद संगीन आरोपों व अपनी ज़मीं से विलग कर दिए जाने का दर्द उभरा हुआ था।

सब कुछ नगीना को बेहद संगीन, दिलचस्प व पीड़ादायक लगा। पढ़ेगी वह और इस लेखक को फ़ोन करके, इस लेख की भटकन का बताएगी या वह इसे उसके

गन्तव्य तक पता लिखकर पोस्ट कर देगी। उसने अपना लिखना भी समाप्त करना है - ख़ाने की मेज़ पर जा कर खाना समाप्त करती है।

ख़ाने की मेज़ के एक कोने में उसने प्रतीक्षारत् उन पत्र और पत्रिकाओं के सबसे ऊपर उस लिफ़ाफ़े को रख दिया ताकि आते जाते उस पर उसकी नज़र पड़े और ताकीद होती रहे कि इस लेखक से बात करनी है।

****

वाल्किंग डैड के कितने ही एपीसोड देखने के पश्चात् नगीना के मन में मनुष्यता के प्रति कई प्रश्न जागृत हो गए, जैसे वह भी उनमें से ही एक चलता फिरता कंकॉल ही हो।

बर्फ़ीली रात है। बाहर घुप्प अन्धेरा है। झिर्रियों से झाँकने पर इक्का-दुक्का आदमी, स्त्री व बच्चे का जिस्म चलते फिरते कंकाल सा नज़र आता है। बिना आवाज़ किए एक बड़ा टैंकर गुज़रा है जैसे वाकिंग-डैड' में टैंकर गुज़रते नहीं, रेंगते थे...।

सामने जालीदार दीवारों के बीच रौशनी टिमटिमाती दिखती है - आस की एक किरण की तरह। गिरती बर्फ़ रूई सी उड़ रही है। कहीं- कहीं कंकालों की तरह बर्फ़ के ढेर लगे हैं। कोई पक्षी भी नहीं फड़फड़ाता।